रिकॉर्ड:- ओम नमो: शिवाय   ओम शान्ती   प्रात: क्लास   5-1-1967

जब बाप और दादा ओम शान्ती कहते है। दो बारी भी कह सकते है, क्यों कि दो युक्तियां है। दूसरा है व्यक्त बयक्ती। तो दोनों इकठा कहें वो दोनों अलग-2 कहें। दो का इकठा आवाज भी होता है नां। यह एक वण्डर है। दुनिया में यह कोई भी नही जानते कि परमपिता परमात्मा इनके शरीर में बैठ ज्ञान सुनाते है। यह कहीं भी लिखा हुआ नही है। बाप ने कल्प पहले भी कहा था अब भी कहते है कि मै इस साधारन तन में बहुत जन्मों के अन्त में इनमें प्रवेश करता हू। इनका आधार लेता हू। गीता में भी कुछ ना कुछ ऐसे वर्शाब्स है जो कुछ रीयल भी है। यह रीयल अक्षर है। मैं बहुत जन्मों के भी अन्त में प्रवेश करता हू जब कि यह वानप्रस्थ अवस्था में है। इनके लिये कहना ही ठीक है, पहले2 सतयुग में जन्म भी इनका है। लास्ट में भी फिर इनका है जिस में ही बाप प्रवेश करते है। तो इनके लिये ही कहते है यह नही जानते कि हमने कितने पुनर्जन्म लिये है। शास्त्रों में 84लाख पुनर्जन्म लिख दिये हैं। यह सब है भक्ति मार्ग के गपोड़े। यह भक्ति मार्ग के गपोड़े होते ही है रावण राज्य में। बच्चे जानते है सभी गपोड़े हैं। कल्प लाखों वर्षों का है मनुष्य की आयु 84लाख जन्म है। यह सब भक्ति मार्ग के शास्त्रों के ही गपोड़े हैं। इनको कहा जाता है भक्ति कल्ट। ज्ञान काण्ड अलग है भक्ति काण्ड अलग है। भक्ति करते,-2उतरते ही आते हैं। यह ज्ञान तो एक ही बार मिलता है। बाप एक ही बार सबि की सदगती करने आते है। बाप आकर सबकी एक ही बार प्रारब्ध बनाते है। भविष्य की। तुम पढ़ते ही हो भविष्य नई दुनिया के लिये। बाप आते ही है नई राजधानी स्थापन करने। इसलिये इसको राजयोग कहा जाता है। इसकी बहुत महिमा है। चाहते है भारत का प्राचीन योग कोई सिखावे। परन्तु आज कल यह सन्यासी लोग बाहर जाकर गपोड़े मारते है कि हम प्राचीन राजयोग सिखाने आये हैं। तो वो भी समझते है हम सीखें। क्यों कि समझते है योग से ही पैराड़ाइज़ स्थापन हुआ था। बाप समझाते हैं योगबल से ही तुम पैराड़ाइज़ के मालिकबनते हो। पैराड़ाइज स्थापन किया है बाप नें। कैसे स्थापन करते है वह नही जानते। यह राजयोग रूहानी बाप ही सिखाते है जिसमानी कोई मनुष्य भी सिखा नही सकते। आजकल ऐडिलट्रेशन, करप्शन तो बहुत है नां। झूठे गपोड़े ही बोलते रहते हैं। सबसे जास्ती ऐडिलट्रेशन करप्शन इन गुरूओं में है इसलिये बाप नें कहा है इन गुरूओं का साथ छोड़ो। मै ही पतितों को पावन बनाने वाला हू। जरूर नीचु फिर पतित बनाने वाले भी कोई होंगे। यह गुरू लोग तो पावन सृष्टी नही रचते है। अभीतुम जज करो कि बरोबर ऐसे है नां। मै ही आकर सब वेदों शास्त्रों सब का सार सुनाता हूं। इनसे अल्प काल क्षणभंगुर सुख मिलता है। ज्ञान से तुमको 21जन्मों का सुख मिलता है। भक्ति मार्गमें है अल्प काल क्षणभंगुर सुख। यह है 21पीढ़ी का सुख। जो बाप ही देते है। बाप तुमको सदगती के लिये जो श्रीमत देते हैं वो सब से न्यारी है। यह बाप सबकीदिल लेने वाला है।

जैसे वो जड़ दिलवाला मन्दिर है यह फिर है चैतन दिलवाला मन्दिर। ऐक्यूरेट तुम्हारी ऐक्टिविटी के ही चित्र बने है। इस समय तुम्हारी ऐक्टिविटी चल रही है। दिलवाला बाप मिला है सबकी सदगती करने वाला। सबका दुख हर सुखकर देने वाला। कितना ऊंच ते ऊंच गाया हुआ है। ऊंच ते ऊंच है भगवान शिव की महिमा। भल चित्रों में शंकर आद के आगे भी शिव का चित्र दिखाया है। वास्तव में देवी देवताओं के आगे शिव का चित्र रखना तो निषेध है। वो तो भक्ति करते नही। भक्ति नां देवतायें करतें है नां शुद्र कर सकते है। क्यों कि सन्यासी तो शिव आद को जानते हीनही है। वो है ब्रह्म ज्ञानी-तत्व ज्ञानी। जैसे यह आकाश तत्व है वैसे ही वो ब्रह्मा तत्व है। वो बाप को तो याद करते नही। नां उनको यह महामन्त्र मिलता है। यह महामन्त्र बाप ही आकर संगम युग पर देते है। सबि का सदगती दाता वो बाप एक ही बार आकर मनमनाभव का मन्त्र देते हैं कि देह सहित देह के सब धर्म त्याग अपने को अशरीरी आत्मा समझो और मुझ बाप को याद करो। कितना सहज समझाते हैं। रावण राज्य के कारण तुम सब शुद्र देह अभिमानी बने हो। अभी बाप तुमको आत्म अभिमानी बनाते है। अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करते रहो तो जो आत्मा में खाद पड़ी है वो निकल जावें। सतोप्रधान से सतो में आने से कलायें कम हो जाती है नां। सोनेके भी कैरेटस होते है नां। अभी तो

कलियुग जन्म में सोना देखनें भी नहीं आता है। सतयुग में तो सोने के महल होते हैं। कितना रात दिन का फर्क है। इसका नाम ही है गोल्डन ऐज़ वर्ल्ड। यह है आयरन ऐज्ड वर्ल्ड। वहां स्टील पत्थर आद का काम नही होता। विल्डिंगस वनते है इसमें सोने चांदी के सिवाय और कुछ, मिट्टी पत्थर नही होती है। वहां साइंस सें वहुत सुख है। यह भी ड्रामा वना हुआ है। इस समय साइंस घमण्डी है। सतयुग में घमण्डी नहीं होते। वहां तो सांइस सें तुमको सुख मिलता है। यहां है अल्प काल का सुख। फिर इससें ही पड़ा भी दुख मिलता है। वाम्बस आद यह सव विनाश के लिये ही वनाते ही रहते हैं। चाईना वनाते हैं यह मना करते हैं। फिर खुद भी वनाते रहते है मनुष्यों की वुधी जैसे कि मारी हुई है समझते भी है हमारा मौत है परन्तु पता नही कौन है जो प्रेरता है। हम वनाने सिवाय रह नही सकते है। जभी वनाने ही पड़े। ड्रामा में नूंध है। इनके विनाश की। कितना भी कुल कोई पीस पराइज़ देवे परन्तु पीस का देने वाला एक वाप ही है। शान्ती का सागर। वो ही शान्ती, सुख, पवित्रता का वर्सा देते है। सतयुग में है केवड़ की सम्पत। दूध की नदी वहती है। विष्णु को क्षीर सागर में दिखाते हैं। भेंट की जाती है कहां वो क्षीर सागर कहां यह विष्य सागर। भक्ति मार्ग में फिर तलाव आद वना उस में पत्थर पर विष्णु को सुला देते है। भक्ति मार्ग में कितना खर्चा करते है। कितना वेस्ट आफ, वेस्ट आफ मनी करते है। देवताओं की मूर्तियां कितना खर्चा कर वनाते है। फिर समुन्द्र में डाल देते है। तो पैसे वेस्ट हुये नां। वाप कहते है रावण नें कितना पूवर वना दिया है। यह है गुड़ियों की पूजा। कोई के भी इनको आक्यूपेशन का पता नही है। अभी तुम किसीके भी मन्दिर में जाओं तो तुम हरएक का आक्यूपेशन जानते हो। वच्चों को मनाह नही है। कही भी जानें की। आगे तो इडियट वन कर जाते थे अव तो सैन्सीवुल वन कर जाते हो। तुम कहेंगें हम इनके 84 जन्मों को जानते हैं। भारतवासियों को तो कृष्ण के जन्म का भी पता नही है। तुम्हारी वुधी में यह सारी नालेज है। नालेज सोर्स आफ इन्कम है। वेद शास्त्र आद में कोई नालेज नही है। स्कूल में हमेशा एम आब्जेक्ट होती है। इस पढ़ाई सें तुम कितने शाहुकार वनते हो। ज्ञान सें होती है सदगती। इस नालेज सें तुम सम्पती वान वनते हो। तुम कोई भी मन्दिर में जावेंगें तो झट समझेंगें। जैसे दिलवाला मन्दिर है वो है जड़। यह है चैतन। हू वहू जैसे यहां झाड़ में दिखाया हुआ है। वैसे मन्दिर वना हुआ है। ऊपर छत में सारा स्वर्ग। वहुत एक्सपेन्सिव वनाया हुआ है। सतयुग भी वहुत एक्सपेन्सिव है नां। यहां तो कुछ भी नही है। भारत 100% सालवेन्ट पावन था। अभी भारत 100% सालवेन्ट पतित है। क्यों कि विकारों सें पैदाइश होती है। वाप समझाते है तुम 63 जन्म विकारों में रहे हो। विष्य सागर में गोते खाते आये हो। अभी दुख हो गया है। जैसे विछुओं वन गये है। विछुओं पेट चीर कर वच्चे पैदा करती है। यहां भी यह फैशन वन गया है। पैदा भी होते है तो विछु नाग, वलायें। वाप कहते है तुम कितना खराव हो गये हो। इस समय की भेंट करते है। मनुष्य विष्य सागर में गोते खाते रहते है। वहां गन्दगी की वात नही होती। गरूड़ पुराण में रोचक वातें इसलिये लिखी है कि मनुष्य कुछ सुधरें। परन्तु ड्रामा में मनुष्यों का सुधरना है नही। वो जो धर्म स्थापक है उनको गुरु भी नही कहेंगें। क्यों कि वो सदगती नही देते है। वो है भक्ति मार्ग के गुरु। सदगती दाता तो एक ही है। भारत में कितने गुरु है। स्त्री का पति भी गुरु कहलाता है। कहते है इनकी आज्ञा में तुमको रहना पड़ेगा। वो तो और ही विष्य वैतरणी नदी में गिरा देते है फिर गुरु कैसे ठहरे। आधा कल्प स्वर्ग में यह गन्द होता नही। विकार की वात नही। वो है ही ईश्वरिय स्थापना। अभी ईश्वरिय स्थापना हो रही है। ईश्वर ही स्वर्ग स्थापन करेंगें नां। उनको ही हैवनली गाड फादर कहा जाता है। वाप नें समझाया है वो लशकर जो लड़ते है वो सव कुछ करते है राजा रानी के लिये। यहां तुम माया पर जीत पहनते हो। अपने लिये। जितना करेंगें उतना पावेंगें। तुम हर एक को अपने तन, मन, धन, भारत को स्वर्ग वनाने खर्च करना पड़ता है। जितना करेंगें उतना ऊंच पद पावेंगें। यहां रहने का तो कुछ है नही। अभी

के लिये ही गायन है किसकी दबी रहे धूल में.... धनी अभी आया हुआ है तुमको राज भाग्य दिलाने। कहते है अभी तन, मन, धन सब इसमें लगा दो। फालो फादर, इसने सब कुछ न्योछावर कर दिया ना। इनको कहा जाता है महादानी। विनाशी धन का भी दान करते है तो अविनाशी धन का भी दान करना होता है। जितना जो दान करें। नामी ग्रामी दानी होते है तो कहते है फलाना बड़ा फलेन्थरोफिस्ट था। नाम तो होता है ना। वो इन्डायरैक्ट ईश्वर अर्थ करते है। राजाई नहीं स्थापन होती है। अभी तो राजाई स्थापन होती है। इसलिये कम्पलीट फलेन्थरोफिस्ट बनना होता है। भक्ति मार्ग में गाते भी है हम वारी जाऊंगी। कुर्बान जाऊंगी। इसमें खर्चा कुछ नहीं है। गवर्मेन्ट का कितना खर्चा रहता है। यहां तुम जो कुछ करते हो अपने लिये। फिर चाहो 8की माला में आओ। चाहे 108में, चाहे 16108 में। 8मे आना है पास विथ आनर। ऐसा योग कमायें जो कर्मातीत अवस्था को पावें। फिर कोई सजायें ना खावें। जैसे रामचन्द्र है इनको भी सजायें खानी पड़ी। क्यों कि नापास हुये। इसलिये इनको बाण दिखाते है। क्षत्री तो हम सब ही वारियर्स है ना। तुम्हारी लड़ाई है रावण से। कोई मनुष्य से नहीं है। नापास होने के कारण दो कला कम हो गये। क्षत्री भी कहलाये और पिछाड़ी में आये। त्रेता को दो कला कम स्वर्ग कहेंगे। पुरुषार्थ तो करना चाहिये बाप को पूरा फालो करने का। उसमें मन, बुद्धि से सरेन्डर होना होता है बाबा यह सब कुछ आपका है। बाप कहते यह सर्विस में लगाओ। मै जो तुमको मत देता हूं वो करो। यूनीवरसिटी खोलो। सैन्टर्स खोलो बहुतो का कल्याण हो जावेगा। सिर्फ यह मैसेज देना है बाप को याद करो और वर्सा लो। मैसेंजर, पैगम्बर तुम बच्चों को कहा जाता है। सबको यह मैसेज दो कि बाप ब्रह्मा द्वारा कहते है कि मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। जीवन मुक्ति मिल जावेगी। अभी है जीवन बंध। फिर जीवन मुक्त हो जावेंगे। बाप कहते है मैं भारत में ही आता हूं। यह ड्रामा अनादी बना हुआ है। कब बना कब पूरा होगा यह प्रश्न नहीं उठ सकता। यह तो ड्रामा अनादी चलता ही रहता है। आत्मा कितनी छोटी बिन्दी है। उसमें यह अविनाशी पार्ट नूंधा हुआ है। कितनी गुह्य बातें है। स्टार मिसल छोटी बिन्दी है। मातायें भी यहां मस्तक पर बिन्दी देती है। अब तुम पुरुषार्थ से अपने आपको राजतिलक दे रहे हो। तुम बाप की शिक्षा पर अच्छी रीत चलेंगे तो जैसे कि तुम अपने को राजतिलक देते हो। ऐसे नहीं कि इसमें आशीर्वाद वा कृपा होगी। तुमही अपनेको राजतिलक देते हो। असल में यह राज तिलक है। उतना पुरुषार्थ करना है। फालो फादर। दूसरे को नहीं देखना है। यह है मनमनाभव। जिससे आपने को आप ही तिलक मिलता है। बाप नहीं देते है। यह है ही राजयोग। तुम बैगर टू प्रिन्स बनते हो। तो कितना अच्छा पुरुषार्थ करना चाहिये। बाप को पूरा फालो करना चाहिये। फिर इनको भी फालो करना है। यह तो समझ की बात है ना। भक्ति मार्ग तो है ही बेसमझी का मार्ग। भक्ति दुर्गती कहा जाता है ना। नालेज को दुर्गती नहीं कहा जाता है। पढ़ाई से तो कमाई होती है ना। जितना-2योग हो गा उतनी-2धारना होगी। योग में ही मेहनत है। इसलिये भारत का राजयोग गाया हुआ है। बाकी गंगा स्नान तो करते-2 कब्र भी चली जायें तो भी पावन बन नहीं सकते। भक्ति मार्ग में ईश्वर के अर्थ गरीबों को देते है। यहां फिर खुद ईश्वर आकर गरीबों को ही विश्व की बादशाही देते है। गरीब निवाज़ है ना। भारत जो 100% सालवेन्ट था वो 100% इनसालवेन्ट है। दान हमेशा गरीबों को दिया जाता है। बाप कितना ऊंच बनाते है। ऐसे बाप को गाली बैठ देते है। सो भी फिर बच्चों गालीयां अणगिनत देते है। बाप कहते है ऐसी जब ग्लानी करते है तब मुझे आना पड़ता है। यह भी ड्रामा बना बनाया है। यह बाप भी है टीचर भी है। सतगुरु भी है। सुप्रीम फादर, सुप्रीम टीचर, सुप्रीम सतगुरु। सत को ही गुरु कहा जाता है। सिख लोग भी कहते है सतगुरु अकाल। बाकी भक्ति मार्ग के गुरु तो ढेर ही है। उनमें कोई ज्ञान नहीं है। अकाल को तख्त जरूर यह मिलता है। तुम बच्चों को भी तख्त ताज करते है। कहते है मैं इनमें प्रवेश कर सबका कल्याण करता हूं। इस समय इनकी यह पार्ट है। मम्मा भी कोईके तन में जाकर सर्विस कर सकती है। ओम